अध्याय 12

लिंग

''संज्ञा के जवना रूप से वस्तु चाहे व्यक्ति के नर चाहे मादा जाति के बोध होय, ओकरा के व्याकरण में **लिंग** कहल जाला।

'लिंग' संस्कृत के शब्द ह जवना के अर्थ 'चिह्न' बतावल गइल बा। चिह्न मतलब जवना से संज्ञा के पहचानल जाव। अइसे व्याकरण चाहे भाषा-विज्ञान में लिंग-विचार के कवनो तार्किक आधार नइखे दिहल गइल जवना से लिंग निर्णय के स्थायी नियम बन सके। सामान्य तौर पर लिंग के दूगो प्रकार बा-प्राकृतिक आ व्याकरणिक। प्राकृतिक लिंग के लक्षण बतावल बा कि स्त्री स्तन आ केशावाली होली आ पुरुष लोमश (बर-बर रोआँ वाला)। जहाँ एह दूनो चिह्न वाला वस्तु पुल्लिंग, स्त्री चिह्नवाली वस्तु स्त्रीलिंग।

भोजपुरी में लिंग के दुइएगो प्रकार बा-**पुल्लिग** आ **स्त्रीलिंग**।

भोजपुरी के प्राणी वाचक शब्दन में लिंग भेद कइल आसान बा, भोजपुरी में प्रयुक्त प्राणीवाचक, संबंध सूचक, पदसूचक, जातिसूचक शब्दन के लिंग भेद के उदाहरण बा-

प्राणीवाचक - बैल-गाय, भइँसा-भइँसी, बकरा-बकरी, कुत्ता-कुत्तिया, पिल्ला-पिल्ली, गदहा-गदही, बाघ-बाघिन, बानर-बनरी वगैरह।

संबंध सूचक - बाप-मतारी, भाई-बहिन, भाई-भउजाई, बेटा-बेटी, भतीजा-भतीजी, पोता-पोती, नाती-नतिनी, बेटा-पतोह, चाचा-चाची, दादा-दादी, जाउत-जइधी, ससुर-सास, फूफा-फुआ, आजा-आजी, देवर-दिआदिन वगैरह।

पदसूचक - मालिक-मलकिनी, गुरु-गुरुआइन, चेला-चेलिन, माहटर-महटराइन चाहे माहटरिन, दरोगा-दरोगाइन, राजा-रानी, वगैरह।

जाति सूचक- बरहामन-बरहामनी, राजपूत-राजपुतनी/राजपुताइन, भूमिहार (भूइंहार)-भूमिहारिन (भूइंहारिन), कायथ-कायथिन, पंडित-पंडिताइन, साव-सहुआइन, तेली-तेलिन, माली-मालिन, अहिर-अहिरिन, मेहतर-मेहतरिन वगैरह।

भोजपुरी में प्राणिवाचक छोट जीव, कीड़ा-मकोड़ा सब के पुल्लिंग रूप में प्रयोग बा ओकर, स्त्रीलिंग रूप नइखें, जइसे-फुफुन्दी, छुछुन्दर, लीख, ढील, गोजर, बिच्छी वगैरह के प्रयोग पुल्लिंग रूप में प्रचलित बा। कुछ प्राणीवाचक शब्द के खाली स्त्रीलिंग रूप बा, पुल्लिंग रूप नइखे, जइसे-सउतिन, एहवाती, चुरइन, कोइल, धोबिन (एगो चिरई) वगैरह। कुछ प्राणीवाचक खातिर दू-दू गो शब्द एके लिंग में प्रचलित बा, जइसे-भइंस, भइंसी (दूनो स्त्री.) जनाना-जनानी (दूनों स्त्री.) वगैरह।

भोजपुरी में क्रिया आ विशेषण के जरिये लिंग सूचित होला, जइसे-

क्रिया- राम जाता/जा तारन

सीता जातिया/जा तारी

विशेषण- बरका लइका/ लरिका
बरकी लइकी/ लरिकी

भोजपुरी में संज्ञा के लिंग हिन्दी जइसन संबंध सूचक विभक्ति चाहे परसर्ग के प्रभावित ना करे। एकरा में हमेशा एके परसर्ग चाहे विभक्ति 'के' के प्रयोग होला, जइसे-देश के नर, देश के नारी, देश के सम्पत्ति वगैरह। एकरा में देश का नर, देश की नारी, देश की सम्पत्ति जइसन 'का' आ 'की' के प्रयोग ना होके खाली 'के' के प्रयोग प्रचलित बा।

भोजपुरी के लिंग सूचक प्रत्यय

(क) पुल्लिंग प्रत्यय-

भोजपुरी में 'अ' आ 'आ' से अंत होखे वाला शब्द प्राय: पुल्लिंग होला, जइसे-

अकारान्त शब्द-घर, दुआर, मचान, परात, बाँस, आम, गाँज, खोंप, मेंह, खेत, हर जुआद, पीपर, बूँट, बबूर, लूक, आङ्गन, लोर, असकत, अपटन, जमघट, झोंक, ठाट, मदर, बाप, ससुर, सार, मल्लाह, ढ़लोहार, कोंहार, सोनार, इयार, देहात, सेवार, उड़िस, जोंक, ढ़ील वगैरह।

अपवाद-सड़क, सरकार, साइकिल, रेल, कमीज वगैरह।

आकारान्त शब्द-हवा, पछुआ, हाथा, दखिनहा, दिअरखा, खपड़ा, नरिआ, रहेठा, केरा, ढाठा, भूसा, गड़हा, खावा, हेंगा, खूँटा, बीआ, पैना, महुआ, लोटा, छनवटा, बाल्टा, पचखा, लेवा, डोरा, बरछा, छाता, सीमिआना, बगैरह।

अपवाद-पुरवइया, खटिया, जमुनिया, थरिया, बगइचा वगैरह

भोजपुरी में उकारान्त आ ऊकारान्त शब्द पुल्लिंग होलें, जइसे-बालू, आलू, गेंहूँ, कोल्हू, चीजु, राहु, खड़ाऊँ, तम्बू (तमू), नीबू, मधु, लट्टू, लेहू वगैरह।

(ख) स्त्रीलिंग प्रत्यय -

इकारान्त आ ईकारान्त शब्द भोजपुरी में स्त्रीलिंग होलें, जइसे-राति, बाति, नदी, उत्तरही, दखिनही, फुफेरी, ममेरी, चचेरी, खाटी, चउकी, गड़ही, बाल्टी, दँवरी, लरही, डाढ़ि, छाड़ि, छिपुली, गगरी, बटुली, चरखी, गँड़ासी, खुरूपी, गमछी, जोन्ही, दुभि वगैरह।

अपवाद-पतई, बालि, कोबी, रमतरोई, सुथनी, पानी, सनई, पाँकी, फीली वगैरह।

भोजपुरी के स्त्रीवाची प्रत्ययन में इया, आइन, इन, आनी, इनी वगैरह प्रमुख बा, जइसे

इया-पुरवइया, खटिया, रहतिया, सुतपुतिया, मदुइया, थरिया, डेहरिया, बछिया, बिछमतिया, डिबिआ वगैरह।

आइन- गुरुआइन, पंडिताइन, ललाइन, ठकुराइन, सहुआइन वगैरह।

इन-लोहइन, चमइन, कहारिन, रजपुतिन, दुसाधिन, नटुइन वगैरह।

आनी-नोकरानी, जेठानी, देवरानी वगैरह।

इनी-समधिनी, गोतिनी, कुरमिनी, मलकिनी, दोस्तिनी वगैरह।

भोजपुरी में 'इया' स्त्रीवाची प्रत्यय के उच्चारण 'इआ' के रूप में भी प्रचलित बा।

एह तरह से भोजपुरी लिंग परिवर्तन के जवन नियम परम्परा से प्रचलित बा, ओकरा से ई साफ उजागर होता कि लिंग परिवर्तन खातिर पुरुषवाची शब्दन में ही परिवर्तन होला। स्त्रीवाची शब्दन से पुरुष शब्द ना बनावल आय। भोजपुरी में कुछ शब्द मूल रूप से पुल्लिंग होले आ कुछ स्त्रीलिंग जवना में लिंग-परिवर्तन खातिर कवनो प्रत्यय के जरूरत ना होय, जइसे-नर-मादा, मरद-औरत/मेहरारू, बाप-मतारी/ माई पति-पत्नी, भाई-बहिन वगैरह। कुछ पुल्लिंग शब्दन में स्त्री वाची प्रत्यय ई, इया, आइन, इन, इनी वगैरह लगा के स्त्रीलिंग शब्द बनावे के प्रचलन लोक-व्यवहार में बा।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'जइधी' शब्द के पुल्लिंग शब्द का होई।

(क) जीजा (ख) जीजी

(ग) जाउत (घ) आजी

2. 'बाघ' शब्द के स्त्रीलिंग शब्द का होई।

(क) बघाइन (ख) बाघिन

(ग) बघनी (घ) बाघनी

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग' के परिभाषा देत ओकरा भेदन के परिचय दीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग आ ओकरा भेदन के उदाहरण सहित परिचय देत भोजपुरी के लिंग सूचक प्रत्ययन के बारे में बताईं।